-: एक कहानी :-

"आदत"

"ए. एस. बलगीर"

22.2.88

रामू पाँचवी कक्षा में पढ़ता था । वह पढ़ाई-लिखाई में काफी तेज था । एक दिन वह स्कूल से किसी लड़के की किताब चुराकर ले आया । किताब चुराकर घर लाने पर उसकी माँ ने उससे कुछ नहीं कहा । रामू के माँ बाप अमीर थे, मगर उनको झूठ बोलने तथा सच्ची-सच्ची बातों को छुपाने की आदत थी ।

अगले दिन रामू किसी के पैसे चुरा लाया । इस बार भी माँ ने रामू को कुछ नहीं कहा । कहने लगी "दो रूपये चुरा लिये तो क्या हुआ, दूसरे बच्चे भी तो ऐसी चोरी करते हैं । मेरे रामू ने चोरी की तो क्या गुनाह कर दिया ?" रामू के पिता अपने काम में इतने मग्न रहते थे कि वे उसकी ओर ध्यान ही नहीं देते थे ।

चोरी करने पर रामू के अध्यापक भी उसे कुछ नहीं कहते थे । वे कहते, "रामू के माता पिता को ही उसके गलत कामों पर ध्यान देना चाहिए ।" हम कक्षा के पचास बच्चों में हर एक का कैसे ध्यान रखें ?

इस तरह रामू बड़ा होकर एक बहुत बड़ा चोर बन गया और इस बार एक बड़ी चोरी करने पर उसे फाँसी की सजा हो गई । फाँसी लगने से एक दिन पहले रामू के माँ बाप को रामू से जेल में मिलने की इजाजत मिल गई । जैसे ही रामू ने अपने माँ बाप को देखा, उसने कान में कुछ कहने के बहाने उनके कान काट लिये । यह देखकर सभी लोगों ने रामू को बहुत बुरा-भला कहा । फिर बोले, "अरे, माँ बाप की तो हर भली-बुरी सन्तान भी इज्जत करती है । यह कैसा नीच पैदा हुआ है ।" रामू के माँ बाप गुस्से में बोले, "अरे बेटे, हमने तेरे लिये क्या नहीं किया था । तेरे को अच्छा खाने को देते थे, पहनने को देते थे । तेरे को पढ़ाया लिखाया और बड़ा किया ।"

रामू ने रोते-रोते सभी को बताया कि इन्हीं माँ बाप की गलती के कारण मैं आज इस हालत में हूँ । मेरे माँ बाप ने सब कुछ दिया मगर आचरण न सिखाया । जब मैं पहले किसी की किताब चुरा लाया था और इनके सामने मैंने झूठ बोला था तो इन्होंने मुझे समझाने की जगह प्यार किया था । इस तरह मेरी गलतियों पर पर्दा डालते रहे । अगर मेरी पहली गलती पर ही मुझे मेरे माँ बाप ने टोका होता और अच्छी बातें सिखायी होती तो आज मैं इतना बड़ा चोर न बन पाता और ना ही मुझे फाँसी होती । इसलिए मैंने इस समय अपनी सूझ-बूझ के अनुसार माँ बाप के साथ उचित व्यवहार ही किया है ।

सीख :-

(1) बच्चो को कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए । हमेशा सत्य बोलना चाहिए ।

(2) यदि गलत काम हो जाए तो साफ-साफ बिना कुछ छिपाये अपने माँ बाप को बता देना चाहिए । गलती को छिपाना, गलती करने से भी बुरा काम माना जाता है ।

(3) माँ बाप का यह कर्तव्य है कि जैसे ही उन्हें अपने बच्चे की गंदी आदत का पता लगे वह समाज की शर्म के मारे उसे छिपाने की कोशिश न करें और ना ही प्यार में आकर गलती पर पर्दा डालें । बच्चे को मारने पीटने की जगह उसे प्यार से समझाने की कोशिश करें । यदि फिर भी वह न समझे तो उसे ऐसे ही न छोड़कर किसी भले आदमी से सलाह लेनी चाहिए जो बच्चे को गलत रास्ते से हटाकर सही रास्ते पर ला सके ।

-: कहानी :-

"कर्तव्य"

ए. एस. बलगीर

दिनांक: 24.3.88

एक महात्मा नदिया के किनारे सैर कर रहे थे । अचानक उन्होंने एक बिच्छू को पानी में डूबते हुए देखा । वे तुरन्त उसे बचाने के लिए किनारे के पास बैठ गये और उसको हाथ से पकड़कर पानी से बाहर निकालने लगे । जैसे ही बिच्छू को बाहर निकाला, उसने महात्मा के हाथ पर काट लिया । महात्मा जी ने तनी-चार बार बिच्छू को पानी से बाहर निकाला मगर हर बार बिच्छू महात्मा जी की उँगली काट कर पानी में फिर कूद जाता ।

महात्मा जी को एक गांव मे आदमी काफी देर से बिच्छू की जान को बचाते हुए देख रहे थे । अतः उनसे रहा न गया । और बोले "महात्मा जी जितनी बार भी आपने बिच्छू की जान बचाने की कौशिश की है उतनी बार ही बिच्छू ने आपकी उँगली को काटा और काटकर फिर पानी में कूद जाता रहा है । आपको ऐसा करने का क्या फल मिल रहा है"। महात्मा जी ने उत्तर दिया, "मेरा धर्म कहता है कि मैं किसी को डूबते को बचाऊं ताकि उसकी जान बच जाये, मगर बिच्छू अपनी जगह पर ठीक है । वह काटने की आदत से मजबूर है मगर मैं बचाने की आदत से मजबूर हूँ" । मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ और वह अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है ।

शिक्षा :-

हमें हमेशा अपना कर्तव्य ठीक ढंग से निभाना चाहिये । यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि उसका क्या फल मिलेगा । बुरा फल भी मिल सकता है मगर हमें अच्छे रास्ते पर ही चलना चाहिये ।

सत्य कथा

ए. एस. बलगीर

दिनांक: 5.4.88

"गुस्सा"

न्यूटन विश्व का एक नेकदिल वैज्ञानिक था । उसे कभी गुस्सा नहीं आता था । उसने एक कुत्ता पाला हुआ था, जिसका नाम डायमंड था । न्यूटन ने अपने कई सालों के जरूरी छपने वाले कागज अपनी मेज पर रखे हुए थे । मेज पर ही एक मोमबत्ती जल रही थी । न्यूटन किसी जरूरी काम से कमरे से थोड़ी देर के लिये बाहर गया । डायमंड छलांग लगा कर मेज पर चढ़ गया । इससे जलती मोमबत्ती न्यूटन के कागजों पर गिर गई और कुछ की क्षणों में सारे कागज जलकर राख हो गये । जब न्यूटन कमरे में वापस आया तो उसे अपने जीवन की सारी मेहनत राख हुई देखकर बहुत निराशा हुई मगर इस पर भी वह सारा गुस्सा पी गया । अपने कुत्ते को सिर्फ इतना ही कह सका, "अरे डायमंड तुझे कुछ पता नहीं, तूने अपने मालिक का कितना नुकसान कर दिया है"।

सीख :-
======

कई बार अनजाने में आदमी दूसरे का बहुत बड़ा नुकसान कर देता है और xx उसे अपनी मूर्खता का अहसास भी नहीं हो पाता । हमें ऐसे आदमी पर भी गुस्सा नहीं करना चाहिये ।

. . . . .

जलियां वाले बाग का काण्ड

ए. एल. बलगीर

22.04.1988.

13 अप्रैल 1919 बैसाखी का दिन था । उस समय हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था । हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी जलियां वाले बाग में एकत्रित हुए थे । यह जगह हरमीन्दिर साहब अमृतसर के पास है । जलियां वाले बाग के चारों तरफ ऊंची दीवारें हैं और वहां से भाग कर बाहर जाना मुश्किल है । उन दिनों अमृतसर में लोगों के इक्ट्ठे होने पर पाबन्दी लगी हुई थी । अंग्रेज सरकार यह नहीं चाहती थी कि भारतीय लोग एकत्रित होकर आजादी की बात करें या कोई ऐसा जलूस निकालें । उन दिनों जनरल डायर नाम के सेनापति अमृतसर में मौजूद थे और वो तुरन्त गोरखा रेजीमैंट की टुकड़ी लेकर जलियां वाले बाग में पहुँच गये यहां पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी । आते ही जनरल डायर ने लोगों की भीड़ पर गोलियां चलाने के आदेश दे दिये जिससे बहुत लोग गोली का शिकार होकर मर गये । इसमें कई बूढ़े, जवान, औरतें तथा बच्चे भी शामिल थे जो गोली का शिकार हुए । जलियां वाल बाग में एक कुँआ था बहुत से लोग उसमें कूद-कूद मर गये । काम समाप्त करके जनरल डायर जब वापिस आये तो चीफ खालसा दीवान संस्था ने उसे पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया । यह लोग हमेशा अंग्रेज सरकार के पिट्ठू थे और भारतीय होने के बावजूद भी ~~अंग्रेजों~~ अंग्रेजों की इज्जत करते थे ।

जलियां वाले काण्ड से सारे भारत में नि:शस्त्र लोगों पर अंधाधुंध गोली चलाये जाने से निराशा फैल गयी और सब लोगों पर बहुत बुरा असर पड़ा । टैगोर ने अपना "सर" का खिताब अंग्रेज सरकार को वापिस कर दिया । कई लोगों ने सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिये इससे आजादी की लहर पूरी तरह से और तेज हो गयी ।महात्मा गांधी जी ने कहा कि "भारतीय लोगों ने आजादी की पहली लड़ाई जीत ली है" ।

बाद में सरदार उधम सिंह ने लंदन जाकर छुप-छुप कर जनरल डायर को एक भरी सभा में भाषण दे देते समय गोली से मार दिया और भारत की इज्जत बचाई । अंग्रेजों ने उधम सिंह को फांसी देकर मार दिया ।

शिक्षा :

1. हमें कभी नि:शस्त्र लोगों पर गोली नहीं चलानी चाहिये ।
2. जानबूझकर बेबकूफ आदमी को मान सम्मान देना अपनी मूर्खता, कायरता और बेशर्मी दिखाने वाली बात होती है । इससे बुरे आदमी का हौंसला और बढ़ता है ।
3. मौत कई तरह से आती है मगर देश की इज्जत बचाने के लिए मरना बहादुरी माना जाता है ।

दीन - ईमान

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 28. 04. 1988.

गुरू तेग बहादुर सिखों के नवें गुरू थे । उन दिनों भारत में मुगलों का राज्य था और औरंगजेब भारत की राजगद्दी पर विराजमान था । औरंगजेब कट्टर मुस्लिम धर्म का समर्थक था तथा सारे भारतीयों को वह मुसलमान देखना चाहता था । इसलिए उसने जगह-जगह पर अपनी फौज व धर्म प्रचारक भेज रखे थे । जो भारतीय व्यक्ति अपना धर्म बदल लेता था उसको इनाम दिया जाता था और इज्जत भी । बहुत से लोगों ने और डर लालच में आकर मुसलमान बन कर रहना स्वीकार कर लिया ।

श्रीनगर में हमेशा से बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म का बोलबाला रहा है । औरंगजेब ने वहाँ पर भी अत्याचार करने शुरू कर दिये । हिन्दुओं के कुछ पंडित लोग गुरू तेग बहादुर जी से मिलने आनन्दपुर साहिब आये और विनती की कि उनके धर्म की रक्षा की जाये । गुरू तेग बहादुर जी भावुक हो उठे और वे पंडितों को दिलासा देकर औरंगजेब से बातचीत करने के लिए दिल्ली चल पड़े । रास्ते में ही गुरूजी को हिरासत में (औरंगजेब के सिपाहियों ने) ले लिया गया और एक लोहे के पिंजड़े में बन्द करके दिल्ली लाया गया ।

निश्चित दिन पर उन्हें चाँदनी चौक की कोतवाली से निकाला गया और भरी सभा में पूछा गया कि आप इस्लाम धर्म को कबूल कर लें । उन्हें तरह-तरह के लालच भी दिये गये लेकिन वे अपनी बात (इस्लाम धर्म स्वीकार न करने की) पर अडिग रहे । आखिरकार उनका शीश काट कर वहीं जीवन समाप्त कर दिया ।

गुरू तेग बहादुर को हिन्दू धर्म बचाने के लिए सम्मान से "हिन्दुओं की चादर" कहा जाता है । चाँदनी चौक दिल्ली में एक बहुत सुन्दर गुरूद्वारा भी है जिसका नाम शीशगंज गुरूद्वारा है, वहां पर रोजाना श्रद्धालू लोग दर्शन करने जाते हैं ।

शिक्षा:

1. किसी लालच, बहकावे या डर या दबाव में पड़कर हमें अपना दीन-ईमान नहीं खोना/बदलना चाहिए ।

2. हमेशा बहादुरी से अपने धर्म की रक्षा करनी चाहिये । जो लोग अपना धर्म बदल डालते हैं उनको सभी लोग धुतकारते हैं और उनको सारी उम्र इज्जत भी नहीं मिलती ।

" मनुष्य के पूर्वज"

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 01.06.1988.

सबसे पहले जब डारविन ने यह सिद्ध किया कि हमारे पूर्वज बन्दर थे तो सारे संसार में बहुत हंगामा मच गया । डारविन को बहुत बुरा-भला कहा गया मगर वे अपने विचारों पर डटे रहे । आजकल के वैज्ञानिकों ने यह सत्य मान लिया है कि मनुष्य केवल बंदरों की संतान हैं ।

हैरानी की बात यह है कि मनुष्य में आज भी वे सभी अवगुण विद्यमान हैं जो जानवरों में पाये जाते हैं । जानवर एक दूसरे का अधिकार खो लेते हैं, हेरा-फेरी कर लेते है, अपने स्वार्थ के लिए हर गन्दी हरकत करते हैं , कई बार दूसरों को मारते हैं, काटते हैं। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है ।

जानवरों में भी गुण होते हैं। कुत्ते, हाथी और घोड़े जैसे जानवर मालिक के लिए बेहद वफादार पाये जाते हैं ।

लिउ टॉलसटॉय संसार का महान कहानीकार माना जाता है । "किसान की छोर वाली कहानी में उसने लिखा है कि वास्तव में जानवरों का खून मनुष्यों में हमेशा पाया जाता है । जब तक खून काबू में रहता है तो मनुष्य मानव की तरह बर्ताव करता है मगर जब वह अपने काबू से बाहर हो जाता है तो मनुष्य जानवरों के समान बन जाता है ।

आजकल जब हम संसार में इतनी गरीबी, भूखमरी, हेरा-फेरी, चालाकी देखते हैं तो यह साफ जाहिर हो जाता है कि मनुष्य इतना समय गुजर जाने के बाद भी जानवरों जैसा ही व्यवहार कर रहा है । यदि ऐसा न होता तो यह दुनिया कब की स्वर्ग बन गई होती ।

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य जानवर जैसा बर्ताव न होकर इनसानियत जैसा व्यवहार होना चाहिये । चूंकि जानवर व इन्सान में केवल इतना ही अन्तर है कि जानवर अपने दिमाग का उपयोग कुरापतों में इस्तेमाल करता है , और इन्सान को अपना दिमाग सही कार्यों में लगाना चाहिये । इन्सान में इतनी समझ होती है कि किस कार्य को करने से किसको कितनी परेशानी, तकलीफ तथा अड़चनें पैदा हो सकती हैं और किसको कितना लाभ, आराम तथा आसानी हो सकती हैं ।मनुष्य का जीवन अनमोल है तथा मनुष्य को अपना जीवन परहित को ध्यान में रखकर ही व्यतीत करना चाहिये यहि मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है ।

"समाप्त"

"शिक्षा का उद्देश्य"

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 13.6.1988.

सभी समाजों की मर्यादा, रीति-रिवाज होते हैं । समाज का प्रत्येक सदस्य इनमें रहकर जीता और मरता है ।

हर मनुष्य में इन्सान और शैतान छुपा होता है । इन्सान सारी उम्र सत्य का रास्ता अपनाता है और किसी को धोखा नहीं देता । अपना कार्य करने से पहले दूसरों के हित के लिए सोचता है । ना खुद झूठ बोलता है और यदि अनजाने में गलती हो जाये तो जल्दी ही क्षमा मांगता है । जब दूसरा गलती कर रहा होता है तो उसे जल्दी मना करता है और डटकर विरोध भी करता है । डर व शर्म के मारे कायरों की तरह छुप कर नहीं बैठता और बहादुरी से हर मुश्किल का सामना करता है ।

शैतान हमेशा गलत कार्य करके खुश होता है और अपने स्वार्थ के सिवाय किसी का भला नहीं सोचता । दूसरों के साथ हेरा-फेरी, चालाकी व दुःखी करके मूर्ख बनाना अपना धर्म समझता है ।

शिक्षा का उद्देश्य स्कूल, कालेज व विश्वविद्यालय जाने तक ही सीमित नहीं है । शिक्षा देने का अर्थ है कि मनुष्य पढ़ने लिखने के बाद अपनी अच्छी आदतें दिखाये और मर्यादा में रह कर एक सभ्य और इज्जत से जीवन गुजारे । यदि कोई पढ़ा-लिखा मनुष्य ऐसा नहीं करता तो उसे जानवर के बराबर ही समझा जायेगा ।

इतिहास में तुगलक नाम का बादशाह पढ़ने का बहुत शौकीन था और सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा माना जाता है । जब वह राजगद्दी पर बैठा तो उसने सारी उम्र ऐसे कार्य किये जिसे देखकर कोई खुश न हुआ । जनता अब तक भी उसको "पढ़ा लिखा बेवकूफ बादशाह" कह कर पुकारती है ।

हमारे जीवन का पढ़-लिख कर यह उद्देश्य है कि हमारे कार्य इतने अच्छे और सभ्य हों कि दूसरों को हमारे व्यवहार और कार्यों से ही पता चल जाये कि हम पढ़े - लिखे हैं । इन्सान बनना किसी-किसी को आता है मगर शैतान हर कोई बनकर जी सकता है । इन्सान उस समय मूर्ख बन जाता है जब उसकी शराफत और इन्सानियत का शैतान अपने प्यार और जजबात में फंसा कर नाजायज लाभ उठाता है, उंगलियों पर नचाता है और वह शैतान के पीछे लग कर गलत रास्ते पर चल पड़ता है ।

-: आदर्श :-

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 22.6.88.

आदर्श जिन्दगी में अच्छे गुणों के माप होते हैं । जब हम किसी दर्जी के पास अपना कपड़ा सिलाने जाते हैं तो सबसे पहले वह अपने फीते से हमारे शरीर का नाप लेता है और फिर हमारे खरीदे कपड़े को नापता है । यदि कपड़ा हमारे नाप के मुताबिक सही होता है तो सच्चा व ईमानदार दर्जी कपड़ा सिलने के लिए हाँ करता है नहीं तो सिलने पहले ही इन्कार कर देता है ।, यदि चालाक या धोखेबाज दर्जी होगा तो कम कपड़े को भी सिलने के लिए हाँ कर देगा क्योंकि उसका मुद्दा सिर्फ अपनी सिलाई का खर्च लेने तक ही सीमित होता है नाँकि ग्राहक की सुविधा का ।

हर मनुष्य अपने जीवन में सच्चाई और ईमानदारी जैसी अच्छी आदतें सीखने की कोशिश करता है । जो सच्चा होता है वह अपने माप के अनुसार सिर्फ सच्चे लोगों, रिश्तेदारों के साथ अपना रिश्ता नाता जोड़ता है। जिस समय उसके जाने पहचाने उसके साथ छल कपट व हेरा फेरी करें तो वह उनका साथ छोड़ देता है क्योंकि वह उसके आदर्शों के मुताबिक ठीक नहीं बैठते ।

हर समय हम अपने आदर्शों/असूलों को नहीं दिखा सकते क्योंकि कभी न कभी थोड़ा बहुत समझौता करना ही पड़ता है नहीं तो संसार में जीना मुश्किल हो जायेगा। जैसे जिस माँ का बच्चा बार-बार झूठ बोले उसे माँ पहले काफी समझाती है ताँकि वह उसके माप के मुताबिक सच्च बोल सके । यदि फिर भी कभी-कभी बच्चा झूठ बोलता है तो माँ बच्चे के साथ थोड़ा बहुत समझौता करके ही जिन्दा रहती है परन्तु अपने प्रिय बच्चे को नहीं छोड़ती । देखने में आता है कि बच्चे ज्यादातर माँ बाप की आदतों/आदर्शों को ही अपनाते हैं ।

संसार में ऐसे कई मनुष्य पैदा हुए हैं जिन्होंने बहुत अच्छे आदर्शों का सबूत दिया है । इब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी, वी.आई.लैनिन, गुरु नानक आदि ऐसे महान लोग थे जिन्होंने किसी भी परिस्थिति में फंसकर अपने आदर्शों को नहीं छोड़ा । इसीलिए आज दुनिया उनके दिखाये गये मार्ग पर चल रही है ।

सोने की कीमत सिर्फ जौहरी ही जानता है । जो मनुष्य अपने असूलों/आदर्शों वाले होते हैं वे ही दूसरे असूलों/आदर्शों वाले मनुष्य की कदर कर सकता है । जीवन में हर मनुष्य अपने असूलों/आदर्शों का ढिंढोरा पीटता है मगर सिर्फ समाज के सदस्य ही उसके काम और आदतें देखकर यह फैसला करते हैं कि उसने असूल व आदर्श का पालन किया है या फिर लोभ-मोह में फंसकर सिर्फ फिसलता ही रहा है । वह जिन्दगी खूबसूरत है जिसमें आदर्शों के साथ कम समझौता किया जाये। जो मनुष्य किसी उद्देश्य को पाने के लिए दीन-ईमान बेचकर अपनी इज्जत व मान के साथ समझौता करते हैं वह हमेशा समाज के कलंक बने रहते हैं चाहे वे बाद में कितने ही अमीर क्यों न बन जायें । असूल/आदर्श अच्छे इन्सानों के प्रतीक होते हैं । कायर लोग कभी आदर्शों की इज्जत नहीं करते क्योंकि वह हर समय अपनी बात को अपने स्वार्थ के लिए बदलते रहते हैं ।

<u>शिक्षा</u> : - हमें एक आदर्श व्यक्ति बनकर जीना चाहिये ।

नीयत

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 4.7.88

मन के अंदरूनी भाव चाहे अच्छे हों या बुरे जब मनुष्य के बाहर निकलते हैं और हम दूसरों से किसी उद्देश्य से बात करते हैं तो वह उसकी नीयत कहलाती है । जो मनुष्य अपने दिमाग में कुछ सोचता है, कहता और करता है कुछ और है उसकी नीयत बुरी मानी जाती है । अच्छी नीयत वाले मनुष्य की कथनी और करनी में कुछ फर्क नहीं होता ।

हमारी नीयत बचपन में ही गन्दी हो सकती है क्योंकि बचपन में सीखे कुछ बुरे संस्कार सारी उम्र मनुष्य का पीछा करते हैं । जैसे जिसको झूठ बोलने की आदत पड़ गई वह सारी उम्र झूठ ही बोलता रहेगा । कई बार देखा गया है कि मनुष्य की आदत इतनी गन्दी बन जाती है कि उसे हर बात में झूठ बोलने की आदत पड़ जाती है और उसे यह महसूस भी नहीं होता ।

हमारे माता पिता, भाई-बहन, रिश्तेदार, दोस्त व शुभ चिंतक बचपन में बहुत सी बातें सिखाते हैं । अनजाने में उसमें कई अवगुण भी हो सकते हैं । प्यार में पड़कर हम सब कुछ सीख जाते हैं । कई बार बुरी संगत में पड़कर बुरी बात सीख जाते हैं जो बाद में संस्कार और बुरी नीयत के रूप में उभरते हैं । आप ने देखा होगा कि कोई भी मम्मी दूसरों के सामने अपने बच्चे को बुरा नहीं कहती चाहे वह कितना भी बुरा क्यों न बन गया हो । मम्मी को यह डर होता है कि कोई दूसरा मनुष्य उसके बच्चे के उसके सामने नुक्स न निकाले । मगर सच्च तो यह है कि ऐसे परदे डालने से बुरा बच्चा कभी अच्छा नहीं बन सकता। वह और ज्यादा गलती करता है क्योंकि उसे पता चल गया होता है कि माँ भी उसकी गन्दी बात को दूसरे के सामने छुपा लेगी ।

बुरी नीयत वाले हमेशा अपने आप को ज्यादा चालाक, बुद्धिमान समझते हैं और वह किसी का लिहाज नहीं करते । उनके लिए झूठ बोलना, धोखा देना, छल कपट करना और ऊंचा-ऊंचा बोलना मामूली बातें होती हैं ।

अच्छी नीयत वाला कभी किसी को धोखा नहीं देता। पूछने पर सच्ची-सच्ची बात करता है । यदि गलती से भूल हो जाये तो सीधी-सीधी बात बता देता है ।

बुरी नीयत वाले छुप-छुप कर अपना काम करते हैं । वह कभी किसी का भला नहीं सोचते । वह अपने स्वार्थ को पाने के लिए हर गलत कार्य कर लेते हैं । बेशर्म, मूर्ख, कमजोर दिमाग वाले, कायर, धोखेबाज, चोर, डाकू, चरित्रहीन, झूठे, विश्वासघाती मनुष्य की नीयत हमेशा बुरी होती है । उन पर कोई विश्वास नहीं करता । उनकी गन्दी आदतों को उनके बच्चे भी सीख जाते हैं और बड़े होकर बुरी नीयत से सबके साथ धोखा, हेराफेरी करते हैं और समाज के लिए कलंक बन जाते हैं ।

शिक्षा :-

हमें अच्छी नीयत से हर बात और कार्य को सोचना , कहना, और करना चाहिए । बुरी नीयत किसी न किसी दिन पकड़ी जाती है और फल बुरा मिलता है ।

" फलों का पेड़ "

ए. एस. बलगीर

दिनांक: 18. 8. 1988.

प्रकृति में तरह-तरह के पेड़ पौधे देखने को मिलते हैं । हर एक का अपना-अपना रंग, स्वाद, सौन्दर्य तथा आकृषण होता है । कई पौधों पर सुन्दर फूल आते हैं जो दूर-दूर से हर मनुष्य तथा पंछियों को आकर्षित करते हैं । कई पेड़ हमें फल देते हैं जैसे आम, सेब, संतरे, अंगूर आदि जो बड़े ही स्वादिष्ट तथा शक्तिवर्धक होते हैं।

सिंबल का पेड़ बहुत विशाल होता है मगर उसके फल, फूल तथा पत्तियां किसी काम में नहीं आते । दूसरी तरफ एक चमेली है जो सिर्फ एक दिन ही खिलती है मगर उसकी खुशबू सारा दिन सबका मन मोह लेती है । सिंबल जैसे पेड़ का क्या लाभ हुआ जो किसी भी काम न आये । इससे अच्छी तो चमेली ही हुई जो एक दिन में ही सबको खुश कर देती है ।

जिस पेड़ पर ज्यादा फल आते हैं वह नीचे को झुक जाता है । ऐसे ही जो मनुष्य ज्यादा गुणों वाले होते हैं वह सबको आकर्षित करके रखते हैं । उनका व्यवहार सभी को अच्छा लगता है और वह समाज में आँखों के तारे की तरह प्रिय बनकर जीते हैं ।

हमें अपने जीवन में बहुत से गुणों को ग्रहण करना चाहिये जिनमें से विनम्रता भी एक है । जिस प्रकार फलों से लदा हुआ पेड़ झुक कर रहता है तथा सभी मनुष्य एवं पंछी उसे सराहते हैं उसी प्रकार हमें भी झुककर अर्थात विनम्रता के साथ रहना चाहिये जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों के काम हम आ सकें तथा ज्यादा से ज्यादा लोग हमें प्रेम एवं आदर दे सकें ।

"धर्म"

ए. एस. बलगीर

दिनांक: 14 - 3 - 1989.

हर रोज हम तरह-तरह के धर्म के लोगों के सम्पर्क में आते हैं । उनमें से कोई हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई बौद्ध, जैन और कोई पारसी आदि होता है । बौद्ध और जैन धर्म को छोड़कर सभी धर्म के पैरोकार भगवान में विश्वास रखते हैं ।

धर्म का अर्थ सिर्फ मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा या गिरिजाघरों आदि में जाने तक ही सीमित नहीं होता बल्कि अपनी आदतों को अच्छा बनाकर अच्छे आदर्शों का प्रतीक बनना होता है । प्रत्येक धर्म से हमें निम्नलिखित शिक्षा प्राप्त होती है :-

- हमें सारी मानवता से प्यार करना चाहिये ।
- झूठ बोलकर या दिखावा करके झूठी शान बनाना मूर्खता होती है अत: हमें सदा सच बोलना चाहिये ।
- अपनी गलती पकड़े जाने पर माफी मांगना बड़प्पन होता है मगर अपनी गलती को दूसरों पर थोपना कायरता होती है ।
- चालाक या पाखण्डी बनकर दूसरों के साथ धोखा-धड़ी नहीं करनी चाहिये अर्थात हमें अपनी अच्छी आदतों द्वारा दूसरों का मन जीतना चाहिये ।
- किसी व्यक्ति द्वारा दूसरों के लिये किये गये भलाई के कार्यों को भूलना अपराध है ।
- हमें बुरे कार्य नहीं करने चाहियें और न ही बुरे कार्यों को बढ़ावा देना चाहिये ।
- हमें अपने सोचने का दायरा अपना स्वार्थ हल करने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिये बल्कि दूसरों की भलाई का भी ध्यान रखना चाहिये ।
- हमें किसी पर जुल्म नहीं करना चाहिये और न किसी का जुल्म सहन करना चाहिये । बल्कि जुल्म का बहादुरी के साथ मुकाबला करना चाहिये ।
- हमें स्वाभिमान से जीना चाहिये और अपने देश, समाज व परिवार की इज्जत को आंच नहीं आने देनी चाहिये ।

जो मनुष्य ऊपर लिखी बातों का ध्यान नहीं करता वह धार्मिक नहीं माना जा सकता । संसार में महात्मा गांधी, शहीद भगत सिंह, मार्टिन लूथर किंग, भीम राव अम्बेडकर, फिरोज गांधी आदि ऐसे महापुरूष हुए हैं जिन्होंने धर्म को सही रूप में समझा और जीवन में उसका सही प्रयोग करके संसार के लोगों को दिखाया ।

यह जरूरी नहीं कि हम किसी धर्म के पैरोकार बनें लेकिन हमारे रोज के कार्यों में हमारी आदतों में अच्छे आदर्शों की झलक पड़नी चाहिये । यह भी जरूरी नहीं कि हम ज्यादा पढ़-लिख कर बड़े धार्मिक बन जायें । भारत के बहुत से गांवों के पंच व सरपंच अनपढ़ हैं मगर वे पंचायत के बहुत से फैसले अपने गांव व समाज के हित को सामने रख कर ठीक करते हैं ।

असल में धर्म मनुष्य को अच्छे और बुरी बातों/कार्यों में अन्तर सिखाता है ।

हमें अपने रोज के कार्य इतने अच्छे तरीके से करने चाहियें कि दूसरे भी उसकी सराहना करें ।

"ईमारत"

ए. एस. बलगीर

दिनांक: 5.4.89

जब हम ईमारत का नाम लेते हैं तो एक दम हमारीआँखों के सामने, ताजमहल, कुतुब मीनार, हवामहल, ईफल टावर तथा लाल किला जैसी सुन्दर ईमारतें आ जाती हैं। इन ईमारतों को बनाने में बहुत सारा धन खर्च हुआ था। बहुत से कारीगर लोगों ने मिल कर काम किया और नये-नये खयालों का इस्तेमाल किया था। ताजमहल जैसी सुन्दर ईमारत को बनाने में करीब 20-25 वर्षों का समय लगा। इसलिये हम सब इस सुन्दर ईमारत को देखने के लिये आगरा जाते हैं और उसको देखने के बाद उसकी सराहना करते हैं।

जैसे एक सुन्दर ईमारत को बनाने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है वैसे ही एक बच्चे को अच्छा इन्सान बनाने के लिये माँ-बाप को बहुत ही परिश्रम करनी पड़ती है। कोई भी बच्चा बचपन में मूर्ख या निकम्मा नहीं होता। उसको अच्छा बनाने में उसके माँ-बाप, संगत अध्यापक, अच्छी पुस्तकें उसका साथ देती हैं।

यह जरूरी नहीं कि जो ईमारत बाहर से देखने में सुन्दर लगे वह जरूर अन्दर से भी आकर्षक हो। जिस ईमारत की नींव कमजोर होगी वह थोड़ा सा भूचाल आने पर एक दम नीचे गिर जायेगी।

जिन बच्चों की आदतें व कार्य बचपन से ही ठीक होते हैं या जिनकी देख-रेख ठीक ढंग से की जाती है वही बड़े होकर रानी झांसी, शिवाजी, राणा प्रताप, फतेह सिंह और जुझार सिंह के समान बनते हैं।

एक सुन्दर ईमारत एक ही दिन में जमीन पर गिरा कर खराब की जा सकती है। अगर किसी ईमारत की देख-रेख ठीक ढंग से न की जाये वह ईमारत भी धीरे-धीरे खराब हो कर नष्ट हो जाती है। ऐसे ही कोई भी बच्चा या व्यक्ति बेकार व बुरा बन सकता है यदि उसके दिमाग को हमेशा सही रास्ते पर लगाकर न रखा जाये।

हमें एक अच्छी ईमारत की तरह एक अच्छा मनुष्य बनने की कामना होनी चाहिये।